1857 के विद्रोह की असफलता के कारण

1857 में ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ भारत में एक शक्तिशाली जन विद्रोह हुआ, जिसने ब्रिटिश सत्ता के समक्ष गंभीर चुनौती पेश की। यद्यपि इसका आरंभ कम्पनी की सेना के भारतीय सिपाहियों द्वारा हुआ लेकिन जल्द ही एक व्यापक क्षेत्र के लोग इसमें शामिल हो गये। देखते ही देखते देश के एक बड़े भूभाग में यह विद्रोह फैल गया। कई स्थानों पर तो अंग्रेजी राज्य के चिह्न तक को मिटा देने का प्रयत्न किया गया, परंतु शीघ्र ही जिस गति से यह विद्रोह फैला उसी गति से उसे दबा दिया गया। इस तरह यह विद्रोह असफल समाप्त हुआ।

1857 ई के विद्रोह की असफलता का मुख्य कारण इसका स्थानीय स्वरूप होना था। इस विद्रोह में यद्यपि सेना, बेदखल जमींदार, कृषक, दस्तकार एवं आम नागरिक भी शामिल थे फिर भी इस विद्रोह ने व्यापक स्वरूप को प्राप्त नहीं किया। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि संभवतः विद्रोह नियोजित समय के पहले ही आरंभ हो गया इसलिये अखिल भारतीय चरित्र को प्राप्त नहीं कर सका। इसके विपरीत कई देशी शासकों जैसे ग्वालियर के सिंधिया, इंदौर के होल्कर, हैदराबाद के निजाम, जोधपुर के राजा, भोपाल के नवाब, नेपाल के राजा, आदि ने विद्रोह को दबाने में अंग्रेजों का सक्रिय सहयोग किया। मद्रास, बम्बई, पश्चिम बंगाल, पंजाब आदि स्थानों पर तो विद्रोह हुये भी नहीं और हुए भी तो स्थानीय कारणों से।

बड़े-बड़े जमींदारों एवं महाजनों ने विद्रोह में हिस्सा नहीं लिया उल्टे विद्रोह को दबाने में अंग्रेजों का साथ दिया। वस्तुतः ये दोनों वर्ग अंग्रेजी राज की ही उपज थे और इसी राज में ही उनकी स्वार्थ पूर्ति हो सकती थी। विद्रोह के समय असंतुष्ट कृषकों ने जमींदारों एवं महाजनों को भी भरपूर लूटा क्योंकि ये दोनों वर्ग ब्रितानी

शासन के शोषणवादी नीति के मुख्य कर्ता-धर्ता थे। इसी प्रकार व्यापारी वर्ग भी विद्रोह से उदासीन था।

शिक्षित मध्यम वर्ग ने विद्रोह को अविवेकपूर्ण एवं प्रतिक्रियावादी माना क्योंकि इस विद्रोह का चरित्र मुख्यतः सामंतवादी था और इसीलिये इन्होंने विद्रोह का समर्थन नहीं किया। भारत का यह वर्ग छोटा अवश्य था किंतु इसका समर्थन और खासकर इसका नेतृत्व विद्रोह के भाग्य को बदल सकता था। लेकिन यह वर्ग किसी भी हालत में भारत को अतीत के सामंतवादी युग में पहुँचाना नहीं चाहता था। इस वर्ग का यह भी मत था कि आधुनिक पश्चिमीकरण द्वारा ही भारत का भाग्य संवर सकता है और इसी कारण इसे अंग्रेजी राज में भी विश्वास था।

1857 ई के विद्रोह की असफलता का एक अन्य कारण विद्रोह के नेतृत्व एवं विद्रोह के शक्ति के बीच सामंजस्य का नहीं होना भी था। विद्रोह की मुख्य शक्ति कृषक एवं दस्तकार थे जबकि नेतृत्व को जमींदारों ने संभाला। अगर इस विद्रोह को कृषक एवं अन्य ग्रामीण तथा शहरी सर्वहारा वर्ग के प्रवाह में बहने दिया जाता तो संभवतः इतिहास का स्वरूप कुछ और होता। किंतु सामंती नेतृत्व ने इस विद्रोह की प्रगति को स्वाभाविक गति से बढ़ने नहीं दिया। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि विभिन्न सामन्ती वर्ग अपने अपने स्वार्थ के कारण ही विद्रोह में शामिल हुये। नाना साहब, विदुर की जागीदारी दीनने पर एवं झाँसी की रानी उत्तराधिकार की समस्या के कारण ही इसमें सम्मिलित हुये। जब अवध के तालुकेदार को जमींदारी वापस करने का आश्वासन दिया गया तो उसने विद्रोह में हिस्सा नहीं लिया।

इसी के साथ यह भी कहा जा सकता है कि योग्य नेतृत्व का अभाव भी विद्रोह की असफलता का एक कारण था। बख्तखाँ से व्यापक विद्रोह का नेतृत्व संभालने की आशा करना

ही व्यर्थ था। इसी प्रकार नाना साहब, कुँअर सिंह, झाँसी की रानी आदि वीर अवश्य थे किंतु कुशल सेनापति नहीं। इसके विपरीत अंग्रेज सेनापतियों (ह्वीलाक, कैम्पबेल, आउट्रम) ने काफी कुशलता एवं योग्य नेतृत्व का परिचय दिया।

एक निश्चित उद्देश्य एवं योजना का अभाव भी विद्रोह की असफलता का कारण बना। विद्रोही विदेशी शासन समाप्त करने पर एकमत थे किंतु उसके बाद की कोई भी योजना उनके पास नहीं थी और अगर थी भी तो पुरातन एवं जीर्ण शीर्ण सामंती समाज की पुनर्स्थापना। सेना ने विद्रोह आरंभ किया किंतु उसका अपना कोई लक्ष्य नहीं था। मुस्लिम वर्ग बहादुरशाह के नेतृत्व में अपने पुराने गौरव एवं अपनी छीनी हुई राज वापस लेने तक ही सीमित थे, परंतु इसे सिक्ख स्वीकारने हेतु तैयार नहीं थे। इसी प्रकार मराठे नाना साहब के अधीन अपनी पुरानी सत्ता लेने हेतु लालायित थे। इसके विपरीत अंग्रेजों के पास एक सुदृढ़ योजना थी।

विद्रोहियों के साधन भी अत्यंत सीमित थे। उनके पास उतने हथियार नहीं थे जितना कि अंग्रेजों के पास। भारतीय सैनिक परम्परागत हथियार एवं कुछ आधुनिक हथियार का उपयोग करते थे जबकि अंग्रेजों ने रायफल तथा तोपखाने का भरपूर उपयोग किया। इसके अलावे अंग्रेजों ने द्रुत के आधुनिक डाकखाने, रेलवे तथा संचार प्रणाली का उपयोग किया।

अंग्रेजों के लिये इस समय परिस्थितियाँ भी अनुकूल हो गई थी। इस समय अंग्रेज अन्य अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं में उलझे हुये नहीं थे। क्रीमिया तथा चीन की लड़ाई का अंत हो चुका था, फ्रांस को हराया जा चुका था एवं अफगानिस्तान से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित हो चुका था। ऐसे में अंग्रेजों के पास विद्रोह दबाने हेतु पर्याप्त समय था।

कूटनीतिक स्तर पर भी अंग्रेज सफल रहे। यह इससे स्पष्ट है कि दस वर्ष पूर्व जिन सिक्खों से अंग्रेजों ने राज्य छीना था, लार्ड एलेनबरो ने जिस सिंधिया का अपमान किया था, 1853 ई. में जिस निजाम से बरार छीना था तथा अफगानों, जिनसे अंग्रेज निरंतर युद्ध करते थे इन सबों को अंग्रेजों ने अपने पक्ष में मिला लिया। इसके विपरीत विद्रोहियों ने अदूरदर्शिता का परिचय दिया तथा लूटखसोट के द्वारा अपने ही वर्ग का समर्थन खो दिया।

राष्ट्रवाद की भावना का विकसित न होना भी 1857 के विद्रोह की असफलता का एक अन्य कारण था। भारत में यूरोप के समान राष्ट्रवाद की भावना का इसलिये विकसित नहीं हो सकी क्योंकि यहाँ पर औद्योगिक क्रांति नहीं हुई थी और भूमि एवं गाँव का महत्व सर्वाधिक था। राष्ट्रवाद के अभाव में परंपरागत सामाजिक मूल्य जैसे जाति के प्रति एवं गाँव के प्रति चेतना ही महत्वपूर्ण था, ज्यादा से ज्यादा इसका विस्तार क्षेत्रों तक होता था। वस्तुतः यही कारण है कि अखिल भारतीय स्तर पर ब्रितानी शासन का विरोध न हो सका।

इस तरह हम देखते हैं कि आर्थिक, राजनीतिक एवं सामरिक दृष्टि से विकसित तथा आत्मविश्वास से लबरेज अंग्रेजों के विरुद्ध नेतृत्व तथा योजना विहीन विद्रोही जिनकी वीरता और ब्रिटिश विरोधी भावना ही हथियार थी ज्यादा देर टिक न सके।